

प्रारंभिक परीक्षा

प्रौद्योगिकी परिप्रेक्ष्य और क्षमता रोडमैप (TPCR-2025)

संदर्भ

भारत ने अपने प्रौद्योगिकी परिप्रेक्ष्य और क्षमता रोडमैप (TPCR-2025) का अनावरण किया है।

प्रौद्योगिकी परिप्रेक्ष्य और क्षमता रोडमैप (TPCR-2025) के बारे में -

- यह रक्षा मंत्रालय द्वारा तैयार किया गया 15-वर्षीय क्षमता नियोजन दस्तावेज है।
- उद्देश्य:
 - भारतीय रक्षा उद्योग को भविष्य की आवश्यकताओं के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करना।
 - आयात पर निर्भरता कम होगी, स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा मिलेगा।
 - परमाणु, साइबर, अंतरिक्ष और ड्रोन क्षेत्रों में उभरते खतरों का अनुमान लगाना।
- प्रमुख विशेषताएँ:
 - **परमाणु निवारण:** उत्तरजीविता प्रणालियाँ, वितरण प्लेटफॉर्म, CBRN(रासायनिक, जैविक, रेडियोलॉजिकल, परमाणु) सुरक्षा, परमाणु कमांड और नियंत्रण अवसंरचना।
 - **ड्रोन युद्ध:** स्टील्थ ड्रोन (सीमा 1,500 किमी तक, ऊँचाई 60,000 फीट), घूमते हुए हथियार, एआई-सक्षम लक्ष्यीकरण, एनबीसी का पता लगाने और तोपखाने के मार्गदर्शन के लिए ड्रोन।
 - **इलेक्ट्रॉनिक युद्ध:** अनुकूली जैमिंग प्रणालियाँ, शत्रुतापूर्ण ड्रोन झुंडों(hostile drone swarms) का मुकाबला करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक डिनायल बबल्स (15 किमी त्रिज्या)।
 - **CBRN रक्षा:** विकिरण संसूचन उपकरण, मोबाइल परिशोधन इकाइयाँ, टोही के लिए मानवरहित ज़मीनी वाहन।

स्रोत: [द हिंदू](#)

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)

संदर्भ

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने वायु गुणवत्ता एवं जलवायु बुलेटिन जारी किया।

मुख्य अंश -

- **PM 2.5 प्रदूषण:** वैश्विक स्वास्थ्य के लिए प्रमुख खतरों में से एक, जिसके कारण प्रतिवर्ष लाखों लोगों की अकाल मृत्यु होती है।
 - कड़े नियमों के कारण उत्तरी अमेरिका, यूरोप और पूर्वी एशिया में इसके स्तर में गिरावट आई है।
 - दक्षिण एशिया और उच्च अक्षांश क्षेत्रों में यह खतरनाक रूप से उच्च बना हुआ है, तथा जंगली आग और औद्योगिक उत्सर्जन के कारण यह और भी बढ़ गया है।
- **शिपिंग उत्सर्जन (MARPOL VI विनियम):** समुद्री ईंधन में सल्फर सामग्री पर प्रतिबंध से वायु की गुणवत्ता में सुधार हुआ और स्वास्थ्य जोखिम कम हुआ।
 - हालांकि, सल्फेट एरोसोल को कम करने से उनका शीतलन प्रभाव थोड़ा कम हो गया, जिससे ग्लोबल वार्मिंग में तेजी आई।
- **वायु गुणवत्ता-जलवायु अंतःक्रियाएं:** जमीनी स्तर पर ओजोन जैसे कुछ प्रदूषक वार्मिंग एजेंट के रूप में कार्य करते हैं।
 - जलवायु परिवर्तन, बदले में, परिवर्तित रासायनिक प्रतिक्रियाओं, प्राकृतिक उत्सर्जन और मानव गतिविधि में परिवर्तन के माध्यम से वायु प्रदूषण को प्रभावित करता है।
- **एरोसोल:** ब्लैक कार्बन और अन्य गहरे एरोसोल सूर्य के प्रकाश को अवशोषित करते हैं, जिससे तापमान में वृद्धि होती है।
 - सल्फेट्स और अन्य परावर्तक एरोसोल सौर विकिरण को विक्षेपित करते हैं, जिससे अस्थायी शीतलन प्रभाव पैदा होता है।

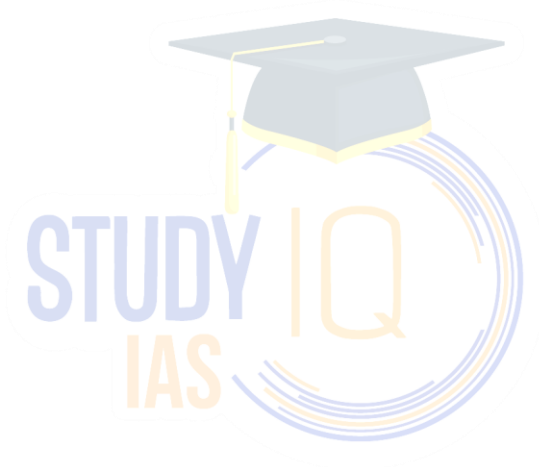
उत्तर भारत (सिंधु-गंगा के मैदान) में शीतकालीन कोहरा -

- **कारण:**
 - वाहनों, उद्योगों और पराली जलाने से निकलने वाले PM2.5 कण कोहरा संघनन नाभिक (FCN) के रूप में कार्य करते हैं।
 - तापमान व्युत्क्रमण इन प्रदूषकों को रोक लेता है, जिससे कोहरा काल लंबा खिंच जाता है।
 - शहरीकरण, ईंट भट्टे और अमोनियम उत्सर्जन कोहरे की समस्या को और भी बढ़ा देते हैं।
- **परिणाम:**
 - परिवहन व्यवधान (सड़क, रेल, वायु)।
 - स्वास्थ्य पर प्रभाव जैसे अस्थमा, श्वसन संबंधी बीमारियाँ, तथा दीर्घकालिक जोखिम।
 - कोहरे के पानी में अक्सर विषैले यौगिक होते हैं, जिससे पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं बढ़ जाती हैं।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) -

- यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है जो मौसम विज्ञान, जलवायु विज्ञान, जल विज्ञान और संबंधित क्षेत्रों में वैश्विक प्रयासों के समन्वय के लिए जिम्मेदार है।
- 1950 में स्थापित। (मुख्यालय - जिनेवा, स्विट्जरलैंड)
- सदस्य: 193, (भारत WMO का संस्थापक सदस्य है)
- विश्व मौसम विज्ञान कांग्रेस, WMO का सर्वोच्च निकाय है।
- यह विश्वसनीय मौसम पूर्वानुमान, जलवायु डेटा और प्राकृतिक आपदाओं के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्रोत: [इकोनॉमिक टाइम्स](#)



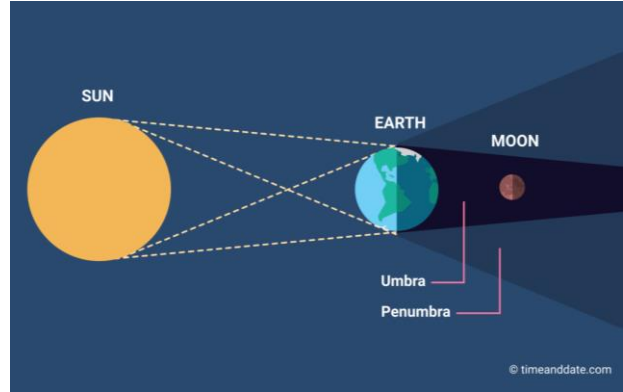
पूर्ण चंद्रग्रहण/ब्लड मून

संदर्भ

8 सितंबर, 2025 को एशिया, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में लोगों ने पूर्ण चंद्रग्रहण देखा, जिसे लोकप्रिय रूप से 'ब्लड मून' कहा जाता है।

चन्द्रग्रहण क्या है?

- चंद्रग्रहण तब होता है जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आ जाती है, जिससे सूर्य का प्रकाश सीधे चंद्रमा तक नहीं पहुंच पाता।
- प्रकार:
 - पूर्ण ग्रहण: चंद्रमा पूरी तरह से पृथ्वी की अम्ब्रा (अंधेरे आंतरिक छाया) से होकर गुजरता है।
 - आंशिक ग्रहण: चंद्रमा का केवल एक भाग ही उपछाया में प्रवेश करता है।
 - उपछाया ग्रहण: चंद्रमा पृथ्वी की उपछाया (बाहरी छाया) से होकर गुजरता है, जिससे हल्का धुंधलापन आ जाता है।
- सूर्य ग्रहण के विपरीत, चंद्र ग्रहण को नंगी आंखों से देखना सुरक्षित है।



ब्लड मून क्या है?

- पूर्ण चंद्रग्रहण के दौरान ब्लड मून दिखाई देता है।
- जब सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के वायुमंडल से होकर गुजरता है, तो नीली रोशनी जैसी छोटी तरंगदैर्घ्य बिखर जाती है (Rayleigh scattering), जबकि लाल रोशनी गुजर जाती है और चंद्रमा पर पड़ती है, जिससे वह लाल या तांबे जैसा दिखाई देता है।
- महत्व:
 - लाल रंग की सटीक छाया पृथ्वी के वायुमंडल में धूल और प्रदूषकों पर निर्भर करती है।
 - उदाहरण के लिए, अतीत में ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण ब्लड मून अधिक काला दिखाई देता था, जिससे जलवायु और पर्यावरणीय इतिहास के बारे में सुराग मिलता था।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

आत्मसम्मान आंदोलन के 100 वर्ष

संदर्भ

इस वर्ष आत्मसम्मान आंदोलन की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं।

आत्मसम्मान आंदोलन(Self Respect Movement) के बारे में -

- **स्थापना:** 1925 तमिलनाडु में
- **संस्थापक:** ईवी रामासामी "पेरियार"
- **उद्देश्य:**
 - जातिगत ऊंच-नीच और अस्पृश्यता को समाप्त करना।
 - तर्कसंगत सोच को बढ़ावा देना और अंधविश्वास तथा धार्मिक रूढ़िवाद के प्रभुत्व को हतोत्साहित करना।
 - उत्पीड़ित जातियों और महिलाओं के बीच आत्म-सम्मान और गरिमा की वकालत करना।
 - सामाजिक समानता, अंतर्जातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह के लिए प्रयास करना।
 - संस्कृत और ब्राह्मण पुजारियों के एकाधिकार को चुनौती देना; तमिल भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देना।
- **प्रभाव:**
 - दक्षिण भारत में पिछड़े और हाशिए पर पड़े समुदायों के बीच सामाजिक जागृति में मदद की।
 - तमिल पहचान और द्रविड़ राष्ट्रवाद की एक नई भावना को जन्म दिया।
 - विवाह कानूनों में सुधार किया गया। (तमिलनाडु में 1967 में आत्म-सम्मान विवाह को मान्यता)
 - द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK) जैसे राजनीतिक दलों को प्रेरित किया।

स्रोत: [द हिंदू](#)

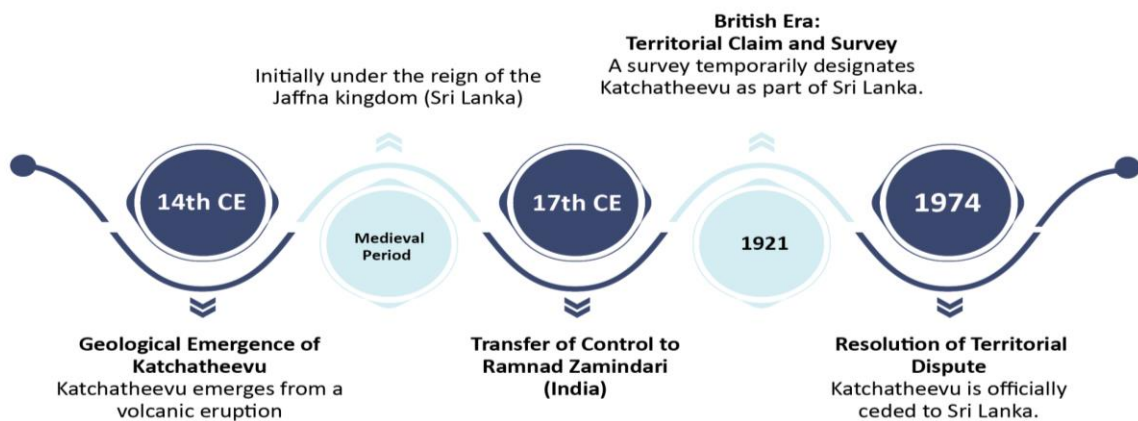
कच्चाथीवु द्वीप

संदर्भ

श्रीलंका के राष्ट्रपति ने हाल ही में कच्चाथीवु द्वीप का दौरा किया।

कच्चाथीवु द्वीप के बारे में -

- कच्चाथीवु पाक जलडमरूमध्य में एक निर्जन अपतटीय द्वीप है।
- सदियों से दोनों देशों के मछुआरे पाक जलडमरूमध्य में मछली पकड़ने के अभियानों के दौरान विश्राम स्थल के रूप में इसका उपयोग करते रहे हैं।
- इस द्वीप में मीठे पानी के स्रोतों का अभाव है, जिससे यह स्थायी निवास के लिए अनुपयुक्त है।



1974 का भारत-श्रीलंका समुद्री समझौता -

- इसका उद्देश्य भारत और श्रीलंका के बीच समुद्री सीमा का निर्णायक समाधान करना था।
- भारत सरकार ने श्रीलंका के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए कच्चाथीवु को न्यूनतम सामरिक महत्व का मानते हुए श्रीलंका को सौंप दिया।
- इस समझौते के तहत भारतीय मछुआरों को बिना वीजा के कच्चाथीवु में आराम करने, जाल सुखाने और धार्मिक स्थलों पर जाने की अनुमति दी गई, हालाँकि मछली पकड़ने के अधिकारों से संबंधित कुछ मुद्दों का समाधान नहीं किया गया।
- बाद के घटनाक्रम:
 - 1976: भारत के मछली पकड़ने वाले जहाज और मछुआरे श्रीलंका के ऐतिहासिक जल, प्रादेशिक सागर तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र में मछली पकड़ने में संलग्न नहीं होंगे, जिससे कच्चाथीवु के पास मछली पकड़ने के अधिकारों पर अस्पष्टता पैदा हुई।
 - श्रीलंकाई गृहयुद्ध (1983-2009) का प्रभाव: संघर्ष ने सीमा विवादों को ठंडे बस्ते में डाल दिया, लेकिन भारतीय मछुआरे अक्सर श्रीलंका के जलक्षेत्र में प्रवेश करने लगे, जिससे मछली पकड़ने की प्रथाओं और संसाधनों को लेकर तनाव उत्पन्न हुआ।

स्रोत: [द हिंदू](#)

उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं पर नई रडार प्रणालियाँ

संदर्भ

भारतीय सेना उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं पर निगरानी की खामियों को दूर करने के लिए उन्नत रडार खरीद रही है।

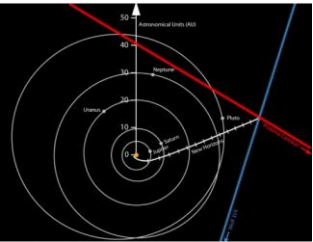
नए रडार सिस्टम के बारे में -

- **उद्देश्य:** कम रडार क्रॉस-सेक्शन (RCS) वाले लक्ष्यों, जैसे छोटे ड्रोन, को पहचानना और उनसे निपटना, जिन्हें पारंपरिक प्रणालियों से ट्रैक करना कठिन होता है।
- **प्रकार:**
 - लो लेवल लाइट वेट रडार (एन्हांस्ड) – LLLR-EI
 - उन्नत ASR (एयर सर्विलांस रडार)।
 - एयर डिफेंस फायर कंट्रोल रडार (ADFCR-DD), विशेष रूप से ड्रोन की पहचान के लिए।
- **विशेषताएँ:**
 - छोटे, तेज़ गति से उड़ने वाले और नीची उड़ान भरने वाले ड्रोन का पता लगाने में सक्षम।
 - निगरानी या हमले के लिए उपयोग किए जाने वाले ड्रोन समूह (स्वार्म) को ट्रैक कर सकते हैं।
 - फील्ड में कमांडरों के लिए अधिक स्पष्ट दृश्यता और तेज़ी से खतरे का जवाब देने की क्षमता प्रदान करते हैं।
- **खरीद:** सेना ने 30-45 किमी की रेंज वाली रडार प्रणालियों के लिए विक्रेताओं को सूचना हेतु अनुरोध (RFI) जारी किया है।
 - ये प्रणालियाँ भारत की काउंटर-ड्रोन संरचना का एक प्रमुख हिस्सा बन जाएंगी।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

समाचार संक्षेप में

हिज्बुल्लाह	समाचार? संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने 2027 तक लेबनान से संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों की चरणबद्ध वापसी को मंजूरी दे दी है, जिससे हिज्बुल्लाह की वर्तमान कमजोरियों के बावजूद उसे निरस्त्र करने की चुनौती पर बहस फिर से शुरू हो गई है। हिज्बुल्लाह के बारे में - ● हिज्बुल्लाह का अनुवाद "ईश्वर की पार्टी" होता है। ● गठन: 1982 में इसराइल के आक्रमण के बाद लेबनान में एक सशस्त्र प्रतिरोध बल के रूप में उभरा। ● प्रकृति: ○ एक शिया इस्लामी उग्रवादी और राजनीतिक संगठन, जो लेबनान की शिया समुदाय में गहराई से जड़े जमाए हुए है। ○ एक मिलिशिया और एक राजनीतिक पार्टी दोनों के रूप में कार्य करता है। ● समर्थन: ईरान की रिवाँल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स से सहयोग प्राप्त, जिसमें धन, हथियार और प्रशिक्षण शामिल है। ● लेबनान में प्रभाव: ○ राजनीति, सुरक्षा और समाज में महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है। ○ मिसाइलों और रॉकेटों का विशाल भंडार रखता है। ○ यह खुद को इजरायल के खिलाफ एक प्रतिरोध आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करता है, तथा घरेलू वैधता प्राप्त करता है। ● पिछले संघर्ष: ○ 2000 और 2006 में इजरायल के साथ युद्ध लड़े। ○ सीरिया के गृहयुद्ध में असद शासन का समर्थन करते हुए भूमिका निभाई। स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस
डॉ. भूपेन हजारिका 	समाचार? बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) के तहत भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) ने डॉ. भूपेन हजारिका की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में "बिस्टरना परोरे: सादिया से धुबरी तक एक संगीतमय यात्रा" का शुभारंभ किया। डॉ. भूपेन हजारिका के बारे में - ● जन्म: 8 सितम्बर 1926, सदिया, असम ● मृत्यु: 5 नवंबर 2011, मुंबई

	● पेशा: ○ प्रसिद्ध पार्श्व गायक, गीतकार, संगीतकार, कवि, फिल्म निर्माता और लेखक। ○ इन्हें "ब्रह्मपुत्र के कवि" के रूप में जाना जाता है। ● राजनीतिक और सामाजिक जुड़ाव: ○ संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया (1999-2004)। ○ असम (1967) में विधायक भी चुने गए। ○ असमिया बुद्धिजीवियों और सांस्कृतिक पुनरुत्थान आंदोलनों के मनोनीत सदस्य। ● सम्मान और पुरस्कार: ○ दादा साहब फाल्के पुरस्कार (1992) ○ पद्म भूषण (2001)। ○ भारत रत्न (2019, मरणोपरान्त) स्रोत: पीआईबी
पिस्मिस-24 	समाचार? नासा के जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) ने पिस्मिस-24 की एक आश्चर्यजनक इन्फ्रारेड इमेज खींची है। इसके बारे में - ● एक युवा तारा समूह, जो स्कॉर्पियस से लगभग 5,500 प्रकाश वर्ष दूर, लॉबस्टर नेबुला में स्थित है। ● यह क्षेत्र तारों के निर्माण का सक्रिय स्थल है, जहाँ नवजात तारों से निकलने वाला विकिरण और तारकीय पवन आसपास की गैस और धूल की मीनारों को आकार देते हैं और आगे तारों के जन्म को प्रेरित करते हैं। ● यह विशाल तारों के जन्म और विकास का अध्ययन करने के लिए एक प्राकृतिक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करेगा। स्रोत: नासा
स्टेलर पैरेलैक्स (Stellar Parallax) 	समाचार? खगोलशास्त्रियों ने दिखाया है कि अंतरिक्ष यान केवल दो तारों को संदर्भ बिंदु बनाकर एक विधि, जिसे स्टेलर पैरेलैक्स कहा जाता है, के माध्यम से गहरे अंतरिक्ष में नेविगेट कर सकते हैं। स्टेलर पैरेलैक्स के बारे में - ● जब पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, तो हम किसी तारे को पृथ्वी की कक्षा के दो विपरीत बिंदुओं (जैसे जनवरी और जुलाई) से देखते हैं।

	● तारा दूर के तारों की पृष्ठभूमि के मुकाबले थोड़ा हिलता हुआ प्रतीत होता है। ● इस स्पष्ट बदलाव को ही स्टेलर पैरेलैक्स कहा जाता है। ● पैरेलैक्स कोण (तारे का स्पष्ट विस्थापन) मापकर, खगोलशास्त्री त्रिकोणमिति की मदद से उस तारे की दूरी की गणना कर सकते हैं। ○ छोटा पैरेलैक्स → तारा दूर है। ○ बड़ा पैरेलैक्स → तारा करीब है। ● उपयोग: ○ अंतरिक्ष नेविगेशन, अंतरिक्ष यान को पृथ्वी से निरंतर संकेतों के बिना स्वायत्त रूप से अपना स्थान निर्धारित करने की अनुमति देता है।
अपातानी जनजाति 	समाचार? अपातानी महिलाओं के टैटू और नोज प्लग—जो कभी पहचान और सुरक्षा के प्रतीक थे—अब धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। अपातानी जनजाति के बारे में - ● स्थान: अरुणाचल प्रदेश के निचले सुबनसिरी जिले की जीरो घाटी में रहने वाली स्वदेशी जनजाति। ● विशिष्ट पहचान: ○ महिलाएँ परंपरागत रूप से चेहरे पर टैटू बनवाती थीं और बड़े लकड़ी के नोज प्लग पहनती थीं। ○ टैटू (जिसे टप्पे कहा जाता है) आमतौर पर तब किया जाता था जब लड़की लगभग 10 वर्ष की होती थी। ● अपातानी लोग टिकाऊ गीले चावल की खेती और मछली पालन के लिए जाने जाते हैं। स्रोत: द हिंदू

समाचार में स्थान

अदीस अबाबा



समाचार? दूसरा अफ्रीका जलवायु शिखर सम्मेलन (ACS2) अदीस अबाबा में आयोजित किया जा रहा है।
अदीस अबाबा के बारे में –

- इथियोपिया की राजधानी।
- इथियोपियन हाइलैंड्स में स्थित, लगभग 2,355 मीटर की ऊँचाई पर — जो इसे दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित राजधानियों में से एक बनाता है।
- नाम का अर्थ अम्हारिक भाषा में “नई फूल” (New Flower) है।
- अफ्रीकी संघ (AU) और संयुक्त राष्ट्र अफ्रीकी आर्थिक आयोग (UNECA) का मुख्यालय यहाँ स्थित है।

मुख्य परीक्षा

भारत में शैक्षिक व्यय में लैंगिक विभाजन

संदर्भ

हाल के समय में, भारत ने विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में सुधार किया है (लड़कियाँ = विद्यालयी जनसंख्या का 48%; उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए थोड़ा अधिक है)। हालाँकि, बच्चों की शिक्षा पर पारिवारिक खर्च में एक छिपा हुआ लैंगिक अंतर अभी भी बना हुआ है।

NSS रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष -

- **व्यय में लैंगिक अंतर:** स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में, परिवार लड़कों की तुलना में लड़कियों पर कम खर्च करते हैं।
 - **ग्रामीण भारत:** परिवारों ने फीस, किताबें, यूनिफॉर्म और परिवहन के मामले में लड़कियों की तुलना में लड़कों पर ₹1,373 या 18% अधिक खर्च किया।
 - **शहरी भारत:** लड़कियों पर प्रति छात्र व्यय लड़कों की तुलना में ₹2,791 कम था।
 - उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, लड़कों पर खर्च 30% अधिक है।
 - **स्कूल प्रकार की प्राथमिकताएँ:** सरकारी स्कूल - 54% लड़कों की तुलना में 58.4% लड़कियाँ नामांकित हैं।
 - **निजी गैर-सहायता प्राप्त स्कूल (अधिक महंगे):** 34% लड़के नामांकित हैं, जबकि केवल 29.5% लड़कियाँ नामांकित हैं।

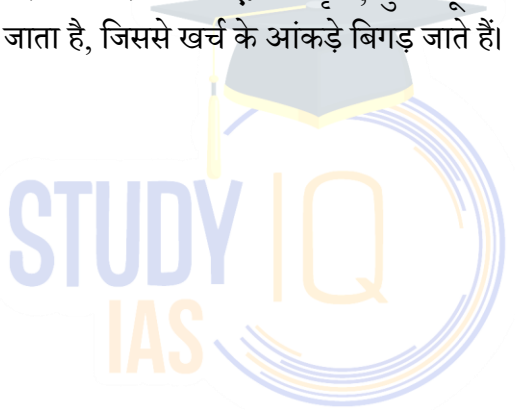
राज्यवार भिन्नताएँ

- **सरकारी बनाम निजी स्कूल नामांकन**
 - **दिल्ली:** सरकारी स्कूलों में 54% लड़के बनाम 65% लड़कियाँ; निजी स्कूलों में 38.8% लड़के बनाम 26.6% लड़कियाँ।
 - मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब: >10 प्रतिशत अंक का अंतर।
- **संतुलित अनुपात:** तमिलनाडु, केरल: सरकारी और निजी स्कूलों में लड़के और लड़कियाँ लगभग बराबर हैं।
- **विपरीत प्रवृत्ति:** पूर्वोत्तर राज्य: निजी स्कूलों में अधिक लड़कियाँ।
- **आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, केरल:** उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लड़कियों पर अधिक व्यय, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में (सुरक्षा से जुड़ी परिवहन लागत के कारण)।

शिक्षा व्यय में लैंगिक अंतर के कारण -

- **सामाजिक मानसिकता और पितृसत्ता:** परिवार लड़कों को "भविष्य के कमाने वाले" के रूप में देखते हैं, जिनमें अधिक निवेश की आवश्यकता होती है। लड़कियों को विवाह और देखभाल की भूमिकाओं के कारण कम आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।
- **स्कूल चयन पूर्वाग्रह:** लड़कों को अक्सर निजी स्कूलों में भेजा जाता है; लड़कियों को सरकारी स्कूलों में रखा जाता है। यह लागत-बचत की प्राथमिकता को दर्शाता है।
- **ट्यूशन निवेश पूर्वाग्रह:** परिवार लड़कों के लिए अतिरिक्त ट्यूशन को प्राथमिकता देते हैं, विशेष रूप से उच्च कक्षाओं में, जहां परीक्षा प्रतिस्पर्धा अधिक होती है।
- **स्कूल छोड़ने वाली लड़कियां और कम उम्र में विवाह:** माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई छोड़ने वाली लड़कियों की संख्या अधिक है → कक्षा 10 के बाद लड़कियों पर कम खर्च।
- **सुरक्षा एवं गतिशीलता संबंधी चिंताएं:** परिवार कभी-कभी सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण दूरवर्ती/निजी स्कूलों में लड़कियों के नामांकन को सीमित कर देते हैं, जिससे खर्च कम हो जाता है।
- **लड़कियों के लिए सब्सिडी और योजनाएं:** छात्रवृत्ति, मुफ्त यूनिफॉर्म और फीस माफी से लड़कियों पर प्रत्यक्ष व्यय कम हो जाता है, जिससे खर्च के आंकड़े बिगड़ जाते हैं।

स्रोत: [द हिंदू](#)



भविष्य के लिए जलवायु प्रतिरोधी शहरों का निर्माण

संदर्भ

भारतीय शहर देश के भविष्य में निर्णायक भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। 2050-2070 तक, शहरी आबादी लगभग 1 अरब हो सकती है, और महानगर कई देशों से भी बड़े होंगे। यह तेज़ शहरीकरण अवसर और जोखिम दोनों पैदा करता है।

2070 तक शहरी बुनियादी ढांचे की आवश्यकताएं और निवेश -

- **शहरी विकास अनुमान:**
 - जनसंख्या: शहरी जनसंख्या 2070 तक 1.1 बिलियन तक पहुंच जाएगी (2020 में 480 मिलियन से)।
 - आवास: 144 मिलियन नई आवास इकाइयों की आवश्यकता (मौजूदा स्टॉक से दोगुनी)।
 - ठोस अपशिष्ट: शहरों में 2050 तक 415 मिलियन टन (2035 तक 285 मिलियन टन) उत्पन्न होगा।
- **निवेश की आवश्यकता वाले क्षेत्र:** शहरी परिवहन, जल आपूर्ति, स्वच्छता, सीवरेज, तूफानी जल निकासी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (SWM)।
- **जलवायु-प्रतिरोधी डिजाइन:** हरित तकनीक, बाढ़ सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा के लिए 9%-27% अतिरिक्त निवेश।
- **वर्तमान खर्च बनाम भविष्य की आवश्यकताएं:**
 - वर्तमान पूंजीगत व्यय: \$10.6 बिलियन/वर्ष (2011-2018) - सकल घरेलू उत्पाद का ~0.7%।
 - भविष्य की आवश्यकता: 2070 के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचे के लिए वर्तमान सकल घरेलू उत्पाद का दोगुना से अधिक हिस्सा।

भारतीय शहरों के सामने प्रमुख चुनौतियाँ -

जलवायु प्रभाव और खतरे

- **बाढ़:** खराब जल निकासी और तेज़ निर्माण के कारण बाढ़ बढ़ रही है। 2030 तक, दो-तिहाई से ज्यादा शहरी निवासियों को सतही/वर्षा बाढ़ का खतरा होगा।
 - अनुमानित घाटा: \$5 बिलियन (2030) → \$30 बिलियन (2070)।
- **अत्यधिक गर्मी:** शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव के कारण शहरों का तापमान ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 3-4°C अधिक बढ़ जाता है। बढ़ते तापमान के साथ, गर्मी से संबंधित मौतों और उत्पादकता में कमी का खतरा बढ़ जाता है।
 - 2050 तक गर्मी से संबंधित मौतें दोगुनी हो सकती हैं।

- **आवास की भेद्यता:** अनौपचारिक बस्तियाँ अक्सर निचले इलाकों में, बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में स्थित होती हैं जहाँ आवास की गुणवत्ता खराब होती है। वर्तमान आवास बाढ़, गर्मी, चक्रवात, भूस्खलन और भूकंप के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।
- **जल की कमी:** बढ़ती मांग और जलवायु तनाव के कारण जल की कमी हो जाती है, विशेषकर उन झुग्गी-झोपड़ियों में जहाँ जल की उपलब्धता कम है।
 - **उदाहरण:** चेन्नई का "डे जीरो" संकट (2019) जब जलाशय सूख गए थे।

शहरी विकास और नियोजन अंतराल

- **तीव्र, अनियोजित शहरीकरण:** 2050 तक जनसंख्या लगभग दोगुनी हो जाएगी, जिससे विकास शहर के बाहरी इलाकों और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में हो जाएगा।
- **अपर्याप्त योजना:** 50% से अधिक शहरों में अनुमोदित मास्टर प्लान का अभाव है; मौजूदा योजनाओं का अक्सर खराब क्रियान्वयन किया जाता है।
- **हरित आवरण की हानि:** प्रति व्यक्ति हरित क्षेत्र की कमी से गर्मी बढ़ती है तथा प्राकृतिक बाढ़ अवशोषण कम होता है।
- **परिवहन की कमजोरी:** सड़कों पर 10-20% जलभराव भी 50% परिवहन प्रणालियों को ठप कर सकता है। गर्मी से रेल की पटरियाँ खराब हो सकती हैं और परिवहन बाधित हो सकता है।

बढ़ते ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन

- **ऊर्जा, परिवहन, भवन:** क्षैतिज, कम घनत्व वाला फैलाव कारों और ऊर्जा मांग पर निर्भरता बढ़ाता है।
- **ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (SWM):** अकुशल अपशिष्ट निपटान से मीथेन गैस उत्पन्न होती है (वैश्विक मानव-जनित मीथेन उत्सर्जन का 20%)। अपशिष्ट से नालियों के अवरुद्ध होने से बाढ़ की स्थिति और बिगड़ जाती है।
- **आवास क्षेत्र:** निर्माण सामग्री (सीमेंट, स्टील) और भवनों में ऊर्जा का उपयोग कार्बन फुटप्रिंट में भारी वृद्धि करता है।

वित्तपोषण और संस्थागत कमजोरियाँ

- **भारी निवेश की आवश्यकता:** जलवायु-अनुकूल शहरी बुनियादी ढांचे के लिए 2050 तक 2.4 ट्रिलियन डॉलर और 2070 तक 10.9 ट्रिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी।
- **कम राजस्व एवं निर्भरता:** नगरपालिकाएं केन्द्रीय/राज्य हस्तांतरण पर बहुत अधिक निर्भर रहती हैं; संपत्ति कर संग्रहण वैश्विक मानदंडों से काफी कम है।
- **सीमित व्यय क्षमता:** कमजोर क्षमता के कारण शहरों को मौजूदा बजट का उपयोग करने में भी संघर्ष करना पड़ता है।
- **जलवायु वित्त पर नज़र रखने का अभाव:** जलवायु संबंधी व्यय पर नज़र नहीं रखी जाती, जिससे जवाबदेही और वित्तपोषण मुश्किल हो जाता है।
- **निजी क्षेत्र की कम भूमिका:** शहरी बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण में निजी क्षेत्र का योगदान केवल 5% है, जो नीतिगत और नियामक जोखिमों से बाधित है।
- **खंडित शासन:** एजेंसियों में भूमिकाओं का अतिव्यापन देरी और खराब समन्वय का कारण बनता है।

- **सीमित तकनीकी विशेषज्ञता:** छोटे/मध्यम शहरों में जोखिम मूल्यांकन और जलवायु नियोजन के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव है।

शहरी जलवायु लचीलापन पहल -

- **अहमदाबाद - ताप कार्य योजना (2013):** प्रतिवर्ष ~1,200 लोगों की जान बचाई गई; इसमें पूर्व चेतावनी, जागरूकता, चिकित्सा क्षमता और ताप-न्यूनीकरण उपाय शामिल हैं।
- **कोलकाता - बाढ़ पूर्वानुमान एवं पूर्व चेतावनी प्रणाली:** 400 सेंसर नोड्स हवा, पानी के ठहराव और तापमान की निगरानी करते हैं; मोबाइल, रेडियो, टीवी के माध्यम से अलर्ट।
- **इंदौर - ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (SWM):** घर-घर जाकर संग्रहण, अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्र, ट्रेकिंग के लिए आईसीसीसी।

वैश्विक उदाहरण

- **योकोहामा, जापान:** एआई/आईओटी का उपयोग करते हुए 2050 तक एकीकृत बाढ़ सुरक्षा, कार्बन-तटस्थ रोडमैप।
- **बेइरा, मोजाम्बिक:** प्रकृति-आधारित समाधानों (नदी पुनरुद्धार, पार्क निर्माण) के साथ संयुक्त जल निकासी।
- **शिजुओका, जापान:** बहुस्तरीय बाढ़ भंडारण क्षेत्र (690,000 m³)।

आगे की राह: जलवायु-अनुकूल और कम कार्बन उत्सर्जन वाले शहरों का निर्माण -

शहर-स्तरीय कार्य योजनाएँ

- **जोखिम आकलन:** नियमित जलवायु जोखिम अध्ययन, ग्रीनहाउस गैस सूची, और भूमि उपयोग योजना में एकीकरण। उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में निर्माण कार्य रोकना।
- **प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ:** कमजोर समूहों के लिए अंतिम मील कनेक्टिविटी के साथ बहु-खतरा चेतावनी प्रणालियाँ।
 - **उदाहरण:** ओडिशा की चक्रवात चेतावनी प्रणाली, जिसे हजारों लोगों की जान बचाने का श्रेय दिया जाता है।
- **जलवायु-संवेदनशील विकास:** मजबूत भवन संहिता, लचीला बुनियादी ढांचा, जोखिम-संवेदनशील क्षेत्रीकरण।
- **एकीकृत जोखिम न्यूनीकरण:** ग्रे इन्फ्रास्ट्रक्चर (जल निकासी, तटबंध) और ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर (आर्द्रभूमि, पार्क, पेड़) दोनों का उपयोग करना। ठंडी छतों, शहरी हरियाली और जल-संवेदनशील डिजाइन को बढ़ावा देना।
- **कमजोर आबादी पर ध्यान केंद्रित करना:** मलिन बस्तियों में यथास्थान उन्नयन, अनुकूल सामाजिक संरक्षण, अंतिम उपाय के रूप में पुनर्वास।
- **कॉम्पैक्ट एवं ग्रीन सिटी योजना:** उत्सर्जन को कम करने के लिए पारगमन-उन्मुख विकास (टीओडी), मिश्रित उपयोग योजना और प्रबंधित घनत्व को प्रोत्साहित करना।

- **नगर निगम सेवाओं का उन्नयन:** अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्र, पुनर्चक्रण, तथा लैंडफिल पर मीथेन संग्रहण।
- **लचीला परिवहन:** सार्वजनिक परिवहन का विस्तार करना, पैदल चलने/साइकिल चलाने को प्रोत्साहित करना, बसों का विद्युतीकरण करना, सड़क प्रणालियों में अतिरिक्त क्षमता का निर्माण करना।
- **हरित भवन:** सौर छतें, ऊर्जा-कुशल डिजाइन, कम आय वाले आवास पुनर्निर्माण के लिए प्रोत्साहन।

राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय लचीलापन कार्यक्रम

- **शहरी लचीलापन मिशन:** बाढ़ लचीलापन और गर्मी प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू करना।
- **क्षमता निर्माण:** नगरपालिका कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना, कुशल शहरी योजनाकारों और इंजीनियरों को नियुक्त करना।
- **डेटा सिस्टम:** जलवायु लचीलापन डेटा, जीएचजी सूची और परियोजना तैयारी के लिए राष्ट्रीय केंद्र।
- **एकीकृत नीतियाँ:** आवास, अपशिष्ट और परिवहन नीतियों को जलवायु लक्ष्यों के साथ संरेखित करना।

वित्तपोषण और संस्थागत सुधार

- **शहरी निवेश में वृद्धि:** शहरी बुनियादी ढांचे, विशेष रूप से जलवायु संबंधी व्यय के लिए सकल घरेलू उत्पाद का हिस्सा बढ़ाना।
- **नगरपालिका राजस्व में वृद्धि:** स्वयं के स्रोत से राजस्व बढ़ाने के लिए संपत्ति कर, उपयोगकर्ता शुल्क और सेवा शुल्क में सुधार करना।
- **जलवायु बजट टैगिंग:** पारदर्शिता में सुधार और वित्त पोषण को आकर्षित करने के लिए शहर के खातों में जलवायु-संबंधी व्यय पर नज़र रखना।
- **नवोन्मेषी वित्तपोषण:** हरित बांड, कार्बन बाज़ार, भूमि मूल्य अधिग्रहण, कर-वृद्धि वित्तपोषण और अंतर्राष्ट्रीय जलवायु निधियों का उपयोग करना। निजी क्षेत्र को शामिल करना: बैंक योग्य परियोजनाएँ बनाना, खरीद में सुधार करना, ऋण गारंटी प्रदान करना और बीमा बाज़ारों का विस्तार करना।

हितधारक सहयोग

- **बहु-क्षेत्रीय योजना:** परिवहन, आवास, जल और अपशिष्ट प्रबंधन योजना को एकीकृत करना।
- **क्षेत्रीय सहयोग:** बाढ़, अपशिष्ट और प्रदूषण की समस्या का समाधान नदी बेसिन और महानगरीय स्तर पर करना, न कि केवल शहरी सीमाओं पर।
- **नागरिक भागीदारी:** नियोजन, अपशिष्ट पृथक्करण, जल संरक्षण, आपदा प्रतिक्रिया में समुदायों को शामिल करना। जलवायु कार्रवाई के लिए जागरूकता अभियान।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#), [भारतीय शहरों पर विश्व बैंक की रिपोर्ट](#)

जीएसटी सुधार - अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

संदर्भ

भारत के जीएसटी में 2017 के बाद से सबसे बड़ा सुधार हुआ है, जिसका उद्देश्य उपभोक्ता लागत को कम करना, मांग को बढ़ावा देना और त्योहारी सीजन में विकास को बढ़ावा देना है - हालांकि इससे राजस्व हानि और राजकोषीय स्थिरता को लेकर चिंताएं भी पैदा होती हैं।

ओवरहाल की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- **जटिल संरचना:** पहले, जीएसटी में कई स्लैब थे - 0%, 5%, 12%, 18%, 28% - और साथ ही क्षतिपूर्ति उपकर भी। इससे भ्रम, अनुपालन का बोझ और अक्सर विवाद पैदा होते थे।
- **क्षतिपूर्ति उपकर की समाप्ति:** उपकर लगाने का कानूनी प्रावधान (राज्यों को राजस्व हानि की भरपाई के लिए उपयोग किया जाता है) 2025 में समाप्त हो रहा है। युक्तिकरण के बिना, तंबाकू जैसी कुछ "पाप वस्तुएं" अचानक सस्ती हो जाएंगी - जो राजनीतिक और सामाजिक रूप से अस्वीकार्य होतीं।
- **उपभोग बढ़ाना:** अमेरिका द्वारा भारतीय निर्यात पर 50% टैरिफ लगाए जाने के कारण, भारत को बाहरी झटकों से निपटने के लिए घरेलू मांग को बढ़ाने की आवश्यकता थी।
- **उपभोग को प्रोत्साहित करना:** पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7.8% रहने के साथ, सरकार गति को बनाए रखना चाहती है और बाद की तिमाहियों में मंदी से बचना चाहती है।
 - कम कर का मतलब है सस्ता सामान, जो उपभोक्ता खर्च को बढ़ावा दे सकता है।
- **अगली पीढ़ी के सुधारों को बढ़ावा:** जीएसटी को सरल बनाना उद्योगों और राज्यों की लंबे समय से मांग थी।

जीएसटी संरचना में बड़े बदलाव -

● नये स्लैब:

- **5%:** आवश्यक वस्तुएं एवं उपभोक्ता वस्तुएं (खाद्य पदार्थ, साबुन, शैंपू, ई.वी., छोटी कारें, कृषि उपकरण)।
- **18%:** आकांक्षी वस्तुएं (टीवी, एसी, सीमेंट, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं, गैर-लक्जरी कारें, दोपहिया वाहन)।
- **40%:** पापकर (**Sin Goods**) – तंबाकू, लक्जरी कारें, अल्ट्रा-लक्जरी सामान।

● बीमा: व्यक्तिगत जीवन और स्वास्थ्य बीमा के प्रीमियम को जीएसटी से छूट दी गई।

- लेकिन बीमा कंपनियों ने इनपुट टैक्स क्रेडिट खो दिया है, जिससे उनकी लागत बढ़ सकती है।

● दर युक्तिकरण: 91% वस्तुओं (453 में से 413) की दरों में कटौती की गई।

लाभान्वित होने वाले क्षेत्र

- **स्वास्थ्य सेवा:** कई चिकित्सा उत्पादों पर जीएसटी 12% से घटाकर 5% किया गया → सस्ता उपचार।
- **नवीकरणीय ऊर्जा:** सौर/पवन घटकों पर कर कम (12% → 5%) → स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा।
- **रियल एस्टेट और निर्माण:** सीमेंट की कीमत में कटौती (28% → 18%), ग्रेनाइट और टाइल्स सस्ते → आवास लागत कम होगी।

चिंता वाले क्षेत्र

- **विमानन:** गैर-इकोनॉमी सीटों पर उच्च जीएसटी की एयरलाइनों द्वारा आलोचना की गई।
- **वनस्पति तेल क्षेत्र:** उलटे शुल्क का मुद्दा अनसुलझा।
- **एमएसएमई:** श्रम शुल्क पर अब 18% कर लगाया गया है (पहले यह 12% था), जिससे परिचालन की लागत बढ़ गई है।

जीएसटी में व्यापक बदलाव का आर्थिक प्रभाव -

अल्पकालिक प्रभाव

- **उपभोग को बढ़ावा:** रोजमर्रा की वस्तुओं पर कम जीएसटी → का मतलब है कम खुदरा कीमतें। अधिक प्रयोज्य आय के साथ, परिवार अन्य वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च कर सकते हैं, जिससे मांग पर गुणक प्रभाव पड़ता है।
- **मुद्रास्फीति में कमी:** खाद्य, चिकित्सा वस्तुओं और निर्माण सामग्री जैसी आवश्यक वस्तुओं पर कम जीएसटी से मुद्रास्फीति का दबाव कम हो सकता है।
- **कुछ क्षेत्रों में व्यवधान:**
 - एयरलाइनों को डर है कि गैर-इकोनॉमी श्रेणी की सीटों पर अधिक जीएसटी से किराया बढ़ जाएगा और मांग प्रभावित होगी।
 - ऑटो डीलरों को चिंता है कि उपभोक्ता नई दरें लागू होने तक (22 सितंबर से) खरीदारी में देरी करेंगे।

मध्यम अवधि का प्रभाव

- **सद्गुणी निवेश चक्र:** अधिक उपभोक्ता मांग → उद्योगों का उत्पादन विस्तार → अधिक नौकरियों का सृजन → उच्च घरेलू आय → पुनः अधिक मांग।
 - **उदाहरण:** सस्ता सीमेंट निर्माण लागत को कम करता है → आवास की मांग बढ़ती है → रियल एस्टेट और संबद्ध उद्योगों में नौकरियां बढ़ती हैं → अधिक आय और खर्च होता है।
- **बाहरी दबावों के बीच विकास को सहारा:** अमेरिका द्वारा भारतीय आयातों पर 50% टैरिफ लगाने से निर्यात प्रभावित हो सकता है। कम जीएसटी से समर्थित घरेलू खपत, वैश्विक झटकों से भारत की जीडीपी वृद्धि को सहारा दे सकती है।
- **हरित अर्थव्यवस्था के लिए प्रयास:** नवीकरणीय ऊर्जा घटकों पर कम जीएसटी से स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन में तेजी आएगी, तथा आर्थिक विकास को स्थिरता लक्ष्यों के साथ संरेखित किया जाएगा।

दीर्घकालिक प्रभाव

- **अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण:** सरलीकृत जीएसटी स्लैब एमएसएमई के लिए अनुपालन बोझ को कम करते हैं, जिससे अधिक छोटी कंपनियां औपचारिक कर के दायरे में आ जाती हैं।
- **निवेश आकर्षित करना:** सरल और अधिक पूर्वानुमानित जीएसटी प्रणाली से भारत की व्यापार सुगमता रैंकिंग में सुधार हुआ है।
- **संघ एवं राज्य सरकार के लिए राजकोषीय चुनौतियां:** क्षतिपूर्ति के बारे में राज्यों की चिंताएं केंद्र-राज्य संबंधों पर दबाव डाल सकती हैं, जब तक कि राजस्व-साझाकरण के लिए एक नया ढांचा विकसित नहीं किया जाता।
 - **केंद्र का अनुमान:** 48,000 करोड़ रुपये की राजस्व कमी।
 - **राज्यों की चिंता:** उन्हें 70% कमी का वहन करना पड़ सकता है; 40% स्लैब पर उपकर की मांग स्वीकार नहीं की गई।
- **संरचनात्मक सुधार की दिशा:** समय के साथ, भारत अन्य परिपक्व अर्थव्यवस्थाओं की तरह, केवल 2-3 जीएसटी स्लैब की ओर बढ़ सकता है। इससे कर प्रशासन सरल हो सकता है, अनुपालन लागत कम हो सकती है, और एक अधिक कुशल, विकासोन्मुखी कर प्रणाली का निर्माण हो सकता है।

और क्या किया जाना चाहिए?

- **राजस्व तटस्थता सुनिश्चित करना:** राज्यों के राजकोषीय स्वास्थ्य की रक्षा करना। सूत्र-आधारित हस्तांतरण या अस्थायी राजस्व-साझाकरण समायोजनों पर विचार करना।
- **उलटे शुल्क ढांचे का समाधान:** वनस्पति तेल, वस्त्र (आंशिक रूप से) और एमएसएमई में अभी भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है।
- **अनुपालन को मजबूत करना और आधार को व्यापक बनाना:** कर चोरी को रोकने के लिए डिजिटल उपकरणों (एआई-संचालित ऑडिट, ई-इनवॉयसिंग, जीएसटीएन डेटा एनालिटिक्स) का उपयोग।
- **औपचारिकीकरण का विस्तार:** एमएसएमई और अनौपचारिक क्षेत्रों को सरल प्रक्रियाओं के साथ जीएसटी के दायरे में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना।

- **जलवायु लक्ष्यों के साथ एकीकरण:** हरित वस्तुओं और ईवी के लिए जीएसटी प्रोत्साहन (कम स्लैब) का उपयोग करना, प्रदूषणकारी उद्योगों के लिए उच्च स्लैब का उपयोग करना।

भारत का जीएसटी 2.0 सुधार एक अधिक निष्पक्ष और सरल कर प्रणाली की ओर एक साहसिक कदम है। यह उपभोग को बढ़ावा देगा, आर्थिक लचीलेपन को बढ़ावा देगा और भारत को वैश्विक कर मानदंडों की ओर ले जाएगा। लेकिन सरकार को स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए राजस्व घाटे और राज्य-स्तरीय राजकोषीय दबावों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना होगा।

